

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

2009
प्रश्न पत्र नाम
की सील

इई स्कूल परीक्षा



- विषय कोड **401** परीक्षा का विषय **हिन्दी (General)**
- परीक्षा का माध्यम **English** परीक्षा की दिनांक **19-03-09**

सेट क्रमांक **401024**

- परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें **T-1002**
स्टीकर तीर के निशान से हिलाकर लयायें

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में **one** अंकों में **1**

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्षा क्रमांक **2** में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एव सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक)

नाम **श्रीमती शोभा देवी** पद **उ. प्र. शिक्षिका**

पता/संस्था **श्री. ग. रा. शा. उ. प्र. मा. वि.**

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

A. M. C.
हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

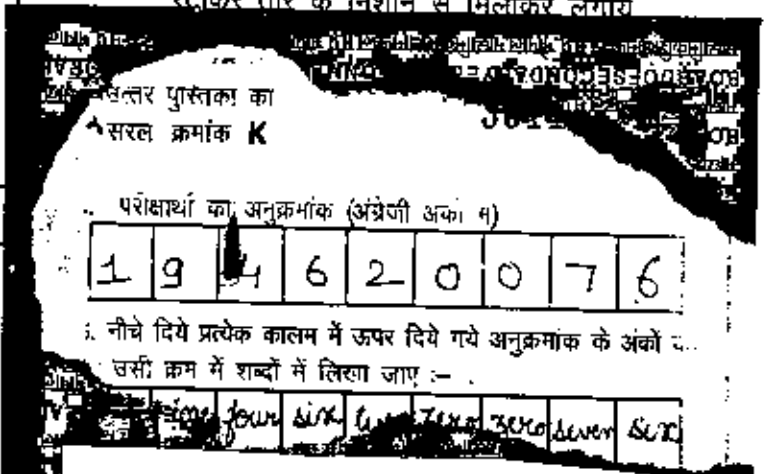
परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिकाओं चरम स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया ग पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कवर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान हैं एवं योग पूर्णतः सही है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) **Smt. Sarita Dubey**
परीक्षक क्रमांक **R.No.- 9740008**

हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक)
दिनांक.....

हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)
दिनांक.....



B
S
E
M
P

1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
कु
प्रा

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न-पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :-

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छ	आठ
3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को 'क्रास' किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कवर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरे उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

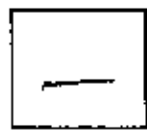
परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

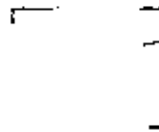
1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

3



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 3 के अंक

=



कुल अंक



B
S
E
M
P

प्र.1 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए.

i) तुलसीदास राम-भक्ति शाखा के कवि थे।

ii) संस्कृति की प्रवृत्ति महाकल देने वाली होती है।

iii) पीडा को दुलारने वाला घनश्याम है।

iv) 'सरस्वती' पत्रिका का सम्पादन महावीर प्रसाद द्विवेदी ने किया।

v) 'सिंगार' शब्द का तत्सम रूप सुंगार है।

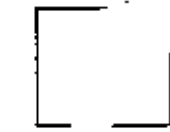
प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य या एक शब्द में दीजिए:

उ.अ) होली खेलने के लिए भीरा, फागुन के चार दिन मनाती है।

उ.प्र) सच्ची नीरता निबन्ध के लेखक सद्यार पूर्ण सिंह है।

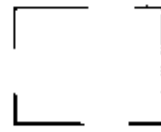
उ.व.iii) 'जो कम बोलता है उसे अल्पभाषी कहते हैं।

4



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 4 के अंक

=



कुल अंक



उ.४) 'एक अनार सौ बीमार' का अर्थ है-
वस्तु एक पर चाहने वाले अनेक।

उ.५) समयभाव का बहाना बनाने वाले
लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाते हैं।

उ.६) साम्प्र 'क' से 'अ' का मिलान कर
जोड़ी बनाइये।

i) इस नदी की धार में दुष्यन्त कुमार

ii) तुम वही दीपक बनोगे दिवाकर वर्मा

iii) हर्ष, विस्मय, घृणा, खुरशी, शोक, कष्ट आदि भावों को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।
विस्मयादिसूचक चिन्ह

iv) मजदूरी और प्रेम सरदार पूर्णसिंह

v) 'क्षणिक' का विलोम शब्द है शारवत

उ.७) सत्य - असत्य

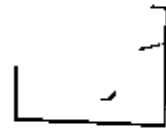
उ.८) संस्मरण में कल्पना तत्व प्रधान

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

5

+



पृष्ठ 5 के अंक

=



कुल अंक



होता है। असत्य

ii) 'साथे में धूप' दुष्यन्त कुमार का गजल - संग्रह है। सत्य

iii) 'नववर्ष मंगलमय हो' इच्छावाचक वाक्य है। सत्य

iv) 'कर्मवीर' कविता में 'ओज' गुण है। सत्य

v) अर्थ के आधार पर वाक्यों को दस भागों में बाँटा जा सकता है। असत्य

35 सही विकल्प लिखिए

36 'राष्ट्र संवर्धन' का सबसे प्रबल कार्य है संस्कृति की साधना

37 'तुम्हारी विरासत' कविता का स्वर है प्रथमवादी आस्थावादी

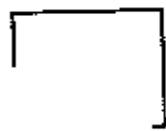
38 समस के पद होने चाहिए दो

P
S
E
M
P

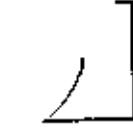
6

य पूर्व पृष्ठ

+



=



उल अंक



प्र. 3 'यह कुटुम्ब एक महान वृक्ष है, हम सब इसकी डालियाँ हैं।' यह कथन है:
उ. दादाजी का।

प्र. 4 'मजदूरी और प्रेम' निबन्ध के अनुसार सच्चा आनंद प्राप्त होता है:
उ. श्रम से।

प्र. 5 'वह देश कौनसा है।' कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए।

उ. पं. राम नरेश त्रिपाठी रचित कविता 'वह देश कौनसा है' में भारत देश की विशेषताओं का वर्णन है। कवि कहते हैं कि भारत का प्राकृतिक सौन्दर्य अप्रतिम है। हिमालय भारत का मुकुट है, सागर निरन्तर इसके चरण धोता प्रति होता है। अर्थात् प्रकृति भी भारत के आगे नतपस्तकी यहाँ अमृत की धारा बहाने वाली नदियाँ हैं जिन्हें सिंचकर धरती ठरी-भरी हो गई है और फल, फूल आदि प्रदान करती हैं। यहाँ के सुगन्धित फूल हमें आनन्दित करते हैं। भारत देश संसार का शिरोमणी है। भारत

B
S
E
M
P

पृष्ठ सं. २



ने ही संपूर्ण विश्व को जगाया और एक-एक ज्ञान का संदेश दिया। इस भूमि पर राम, लक्ष्मण, भरत आदि पौराणिक नायकों को जन्म दिया। अन्त में कवि कहते हैं जो सुशिक्षित हैं वे लोग ही यह सब सब भारत के बारे में बता सकते हैं।

५- 'बरखा गीत' गीत के अनुसार वर्षा के आगमन पर धरती में क्या क्या परिवर्तन होते हैं।

उ- कवि श्री रमानाय अवस्थी कहते हैं कि दुख के बाद सुख का आगमन अवश्य होता है। शिशु शिशु ऋतु के अंत में ताप के बाद वर्षा ऋतु आती है। वर्षा के आगमन पर धरती हरी-भरी हो जाती है। मरुस्थल भी वर्षा के आगमन पर भीग चुका है। आकाश में आनन्दित करने वाली बदली छा गई है। पेड़ों की छाया गहरी हो गई है। पेड़ों पर झुले पड़ गये हैं, युवतियाँ इस झुले पर झूलती हैं और सावन में गाये जाने वाला गीत (कजली) गाती हैं। पृथ्वी के एवं प्राणियों की प्यास बुझ जाती है।



सारा वातावरण सुख और आनन्द से भर जाता है।

- प्र. 8 'शबरी' ने कुटिया में राम और लक्ष्मण का सत्कार कैसे किया।
- उ. शबरी बहुत वर्षों से श्रीराम के आने की प्रतीक्षा कर रही थी। जब श्रीराम उनकी कुटिया में आते हैं, तब वह बिहल हो जाती है। वह सोचती है कि वह उनका सत्कार कैसे करे। उनके स्वागत के लिए कौन-सी वस्तु लाए। शबरी सर्वप्रथम श्रीराम के चरण धोती है। फिर उन्हें मृगचर्म के आसन पर बिठाती है। फिर वह उनके स्वागत के लिए लाए गए बर उन्हें भेंट करती है।

प्र. 9 सम्राट अशोक के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

उ. सम्राट अशोक के चरित्र की विशेषताएँ :-

1. वे साहसी, वीर और पराक्रमी थे।



2. वे गुणाग्रही थे उन्होंने बालिका अमिता के गुणों को ग्रहण कर मुद्रण करने की प्रतिज्ञा की थी।
3. वे स्त्री जाती का सम्मान करते थे, उनपर अस्त्र-शस्त्र नहीं चलाते थे।
4. वे दृढ़ निश्चयी थी, जब उन्होंने अमिता के आगे पुठा लिया उसके बाद उन्होंने पृथ्वी पर विजय पाने की कामना त्याग दी थी।

प्रा० "विद्वता की शोभा अहंकार नहीं विनम्रता है।" वसिष्ठ का आशय स्पष्ट कीजिए।

3. 'विद्वता की शोभा अहंकार नहीं विनम्रता है क्योंकि अहंकार से विद्वता कभी भी प्रदर्शित होती है। ब्रह्मा ने भी कवि माघ के अभिमान युक्त पांडिन्य को स्वीकार न करके विनम्र रहने की सीख दी। विनम्र व्यक्ति झले ही अनपढ़ है क्यों न हो पर तब भी लोग उसके बारे में अच्छा ही सोचते हैं। परन्तु जब कोई विद्वान व्यक्ति अपनी विद्वता को अहंकार से प्रदर्शित करता है तो उसकी विद्वता की कोई



महत्व नहीं रहता। इसलिए हमें विनम्र बनते हुए विद्वता को प्रदर्शित करना चाहिए जिससे सबका लाभ हो।

प्र. 11) प्रसन्न व्यक्ति की ओर लोग क्यों आकर्षित होते हैं ?

उ. प्रसन्नचित्त व्यक्ति की ओर सब आकर्षित होते हैं और उसकी मैत्री प्राप्त करना चाहते हैं। प्रसन्नता एक आध्यात्मिक वृत्ति, एक देवी चेतना है जिसका आश्रय ग्रहण करने वाले के सारे शोक संताप दूर हो जाते हैं। जब लोग प्रसन्नचित्त व्यक्ति को देखते हैं तो वे भी प्रसन्न हो जाते हैं और अपने सारे शोक भूल जाते हैं। जब वही अप्रसन्न रहने वाले व्यक्ति के साथ कोई रहना पसंद नहीं करता। सब उससे दूर भागते हैं। मुस्कान में एक प्रकार का सम्मोहन है जिसके द्वारा हम हर व्यक्ति का दिल जीत सकते

11

+ [] =

पाठ पृष्ठ

पृष्ठ

कि

कुल अंक



हैं।

प्र. 12 'उपन्यास' विद्या की संक्षिप्त परिचय देते हुए प्रेमचन्द के नाम लिखिए।

उ. 'उपन्यास' एक ऐसी गद्य रचना है जो अपने अन्दर अनेक गौण कथाएँ समेटे हुए होती है।

उपन्यास बहुत विस्तृत होता है। इसमें जीवन में घटित बहुत सी घटनाओं का समावेश होता है। 'उपन्यास प्रसादनम्' का अर्थ है किसी चित्र-चित्र को इस प्रकार संजोकर रखना जिससे पढ़ने वाले का लाभ हो।

उपन्यास अंग्रेजी के 'नॉवेल' शब्द का वाच्यवाची है। संस्कृत में उपन्यास के लिए 'नवेल' शब्द का प्रयोग किया गया था। उपन्यास आज के युग की बहुत प्रसिद्ध विद्या है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के मतानुसार - 'युग की गतिरिच्छाओं में किसी एक चित्र को पूर्ण मनोभाव प्रदर्शित करने वाला गद्य उपन्यास कहलाता है।'

मुंगी प्रेमचन्द को 'उपन्यास-सम्राट' भी कहा जाता है। उनके प्रमुख

B
S
E
M
P

अंक



उपन्यास है - शबन, शोदान, कर्मभूमि, सेवासदन आदि।

प्र. 13

(क) दो वाक्य शुद्ध करके लिखिए -

प्र. 13 (क) हमारी देश की सरकार ईमानदार है।
शुद्ध हमारे देश की सरकार ईमानदार है।

प्र. 13 (ख) कश्मीर की सौन्दर्यता मनमोहक है।
शुद्ध कश्मीर का सौन्दर्य मनमोहक है।

प्र. 13 (ख) वर्तनी शुद्ध कीजिये -

अशुद्ध

शुद्ध

1 अज्जैनी
2 ज्योतसना

अज्जायिनी
ज्योत्सना

प्र. 14

(क) पशुपिबान्धी शब्द है

1 फूल = पुष्प, कुसुम, सुमन।

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंक



2. आकाश :- अम्बर, नभ।

प्राप(ख) विलोम शब्द :-

1	उपकार	अपकार
2	लाभ	हानि

प्र. 5 (क) निर्देशानुसार वाक्य परिवर्तित कीजिए.

अ गुरुजनों का सम्मान करना चाहिए।
(अज्ञावाचक)

उ गुरुजनों का सम्मान करो।

ब प्रशान्त घर पर है। (सन्देहवाचक)

क शायद प्रशान्त घर पर है।

प्राप(ख) वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए:

(अ) भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या वृद्धि के कारण समझाया जाता है।

बृद्ध- भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या का कारण बताइए।

B
S
E
M
P

ब शोभा गाना गाता है।
 सुदृ शोभा गाना गाती है।

प्र. 16 "कुटुम्ब एक महान वृक्ष है। छोटी-बड़ी सभी डालियाँ उसकी छाया को बढ़ाती हैं।" सुखी डाली एकांकी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उ सुखी डाली के लेखक उपेन्द्रनाथ अरक बताते हैं कि "कुटुम्ब एक महान वृक्ष है। छोटी-बड़ी डालियाँ उसकी छाया को बढ़ाती हैं।" जिस प्रकार छोटी-बड़ी सभी डालियाँ मिलकर वृक्ष की छाया बढ़ाती हैं उसी प्रकार संयुक्त परिवार के सभी छोटे-बड़े लोग मिलकर उस सुख शांति को बढ़ाते हैं। इस एकांकी में दादाजी को वटवृक्ष की भाँति बताया गया है। जिस प्रकार वटवृक्ष की छाया स्थिर-सुखद और सुन्दर होती है उसी प्रकार घर के मुखिया के संचालन से सुखी और समृद्ध रहता है। जिस प्रकार वटवृक्ष अपने अंदर अनगिनत कुल-पत्ते, घोंसले



B
S
E
M
P

आदि संभाले हुए हैं उसी प्रकार दादाजी भी सब को साथ में लेकर चलते हैं। उनका मानना है कि परिवार के सभी सदस्य एक समान हैं। वे कहते हैं कि यदि वटवृक्ष से कोई भी डाली टूट कर गिर जाती है तब लाख पानी देने पर भी उसमें सरसता नहीं आती, ठीक उसी प्रकार परिवार के सभी से भी यदि कोई अलग हो जाता है तो लाख कोशिश करने पर भी अपनत्व की भावना नहीं आती। जिस प्रकार वटवृक्ष सभी चीजों को साथ में लेकर चलता है तभी उसका अस्तीत्व होता है। उसी प्रकार परिवार के सभी सदस्य साथ में मिल-जुलकर रहे तो बहुत फायदा होता है। हमें वटवृक्ष से प्रेरणा लेते हुए आगे बढ़ना चाहिए और वटवृक्ष की तरह एकता का बाँध बढ़ाना पड़ना। इस लिए अनेक कारणों से उक्त उक्ति को स्पष्ट कर सकते हैं।



प्र. 7 संदर्भ प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।

“पायो ————— गायौ।”

संदर्भ :- यह पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'वासंती' के पाठ-3 'मीरा के पद' से ~~हैं~~ अवतरित की गई हैं। इसकी रचयिता मीराबाई हैं।

प्रसंग :- इन पंक्तियों में रामरतन धन को अमोलक कहा गया है।

व्याख्या :- कवयित्री कहती हैं कि उन्हें अपने सतगुरु, की कृपा से रामरतन धन नामक अमूल्य धन प्राप्त हो गया है। उन्होंने इस जनम-जनम की श्रृंखला अर्थात् रामरतनधन को प्राप्त करने के लिए लोक-लाज सब कुछ छो दिया है। यह धन खर्च क नहीं हो सकता है और न ही इसे चोर चुरा सकते हैं। यह धन तो सबाया के रूप में दिन-दिन बढ़ता ही है। सत की नाव के खेवणहार सतगुरु है। सतगुरु सत रूप नाव पर बैठकर ही भवसागर को पार



किया जा सकता है। सत्गुरु ही हमें इस संसार रुपी भवसागर से पार करा सकते हैं। अंत में भीरा जी कहती हैं कि वे अपने प्रभु गिरधर नागर अर्थात् श्री कृष्ण के उर्षित हो-होकर यश गा रही हैं।

B
S
E
M
P

प्र. 18. अपठित गद्यांश को बढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

उ. (अ) 'माँ' उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है।

प्र. 19. मनुष्य को संसार से परिचित कौन कराता है ?

उ. मनुष्य को संसार से परिचित कराने वाला विधाता माँ ही है।

उ. स. माँ और मातृभूमि संसार के सभ्य देश और सभी भाषाओं में वंदनीय हैं। वे स्वर्ग से भी अधिक प्यारी होती हैं।



प्र.19 पद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे
प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

अ(अ) उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक
युवा है।

अ(ब) युवा काल को भी काल दिखा
सकते हैं, वे देश का सौभाग्य
खून से लिख सकते हैं। साथ
ही वे युग को नई तस्वीर दे
सकते हैं और शत्रुओं का कलेजा
चूर कर सकते हैं।

अ(ख) युवा अपनी गर्जना से शत्रुओं
का कलेजा चूर कर सकते हैं।

प्र.20 विद्यालय छोड़ने का प्रमाण-पत्र
प्राप्त करने हेतु प्राचार्य को एक
प्रार्थना-पत्र लिखिए।



उ. सेवा में,

माननीय प्राचार्य महोदय,
संस्कार हाई स्कूल,
देवास (म.प्र.)।

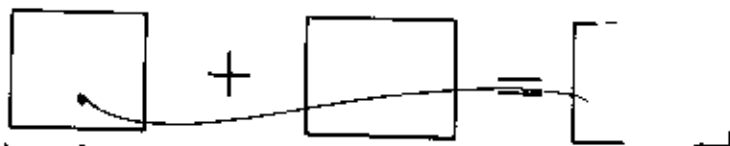
विषय - शाला छोड़ने का प्रमाण-पत्र
प्राप्त करने हेतु, प्रार्थना पत्र।

श्रीमानजी,

सविनय निवेदन है कि मैं
आपके विद्यालय की दसवीं 'अ' कक्षा
में पढ़ती हूँ। मेरे पिताजी का
तबादला भोपाल हो गया है। इस मेरा
पूरा परिवार भोपाल जाकर ही
रहेगा। इसलिए मैं अपनी पढ़ाई
इस विद्यालय में जारी नहीं रख
सकती।

कृपया करके मेरा शाला
छोड़ने का प्रमाण-पत्र देने का
कष्ट करे ताकि मुझे वहाँ के किसी
विद्यालय में इस दाखला मिल सके।
मैं इस बात के लिए सदैव आपकी
आभारी रहूँगी।
धन्यवाद।

B
S
E
M
P



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 20 के अंक

कुल अंक



दिनांक : 06/04/09

आपकी आज्ञाकारी छात्रा,

अ व स

कक्षा - दसवीं (अ)

प्र.2। निबन्ध लिखिए :

उ.

- निबन्ध -

विज्ञान वरदान या अभिशाप

रूपरेखा :-

1. प्रस्तावना।
2. प्राचीन काल में विज्ञान
3. आधुनिक काल में विज्ञान।
4. विज्ञान वरदान के रूप में।
5. अतीत में विज्ञान।
6. विज्ञान अभिशाप के रूप में।
7. उपसंहार।

“जिसने नई सभ्यता दी है, मानव की संतान को प्रद्व्युत्त प्रणाम है मेरा उस विज्ञान महान को। विष्णु सा पालक है जो है शंकर सा संहारक। पुजा उसकी शुद्ध भाव से करो आज के अध्यात्म”

प्रस्तावना :- आज के युग को विज्ञान का युग कहा जाता है। यह

B
S
E
M
P

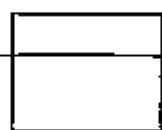


पृष्ठ के अंकों का योग



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 21 के अंक

=



कुल अंक

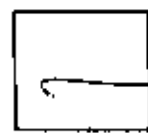
B
S
E
M
P

इसलिए कि विज्ञान आज के युग पर पूरी तरह छा चुका है। जिधर देखो उधर विज्ञान ही दिखाई देगा। जिधर सुनो उधर विज्ञान ही सुनाई देगा। विज्ञान को ने मनुष्य को ऐसे-ऐसे उपकरण दिये हैं कि मानव दाँतो तले उँगली दबाए रह जाता है। राष्ट्रकवि 'दिनकर' ने कहा है—

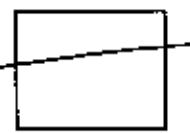
“पूर्व युग सा आज का जीवन नहीं लाचार आ गया है दूर द्वापार से बहुत संसार यह समय विज्ञान का सब झॉति पूर्ण समय खुल जाये गुह्य संसृति के अमित गुरु अर्थ फिरता तम को सँभाले है बुद्धि की पतवार आ गया है ज्योति की नव-श्रमि में संसार।”

प्राचीन युग और काल में विज्ञान - विज्ञान मात्र आधुनिक

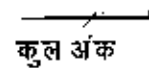
युग की ही देन नहीं है अपितु प्राचीन युग की देन है। आर्यभट्ट, भूगोल, चरक आदि विज्ञान जगत के आदर्श माने जाते हैं। महाभारत के अस्त्र-शास्त्र हो या रामायण का पुष्पक विमान इन सब का विकसित रूप आज हम मिसाइलें और हवाई



योग पूर्व पृष्ठ



पृष्ठ 22 के अंक



कुल अंक



B
S
E
M
P

जाहज के रूप में देख सकते हैं।
शून्य बिन्दु का आविष्कार प्राचीन
विज्ञान ने ही किया था। यहाँ
तक की चकमक पत्थर से सर्वप्रथम
अग्नि उत्पन्न करना भी एक महत्वपूर्ण
वैज्ञानिक उपलब्धि थी।

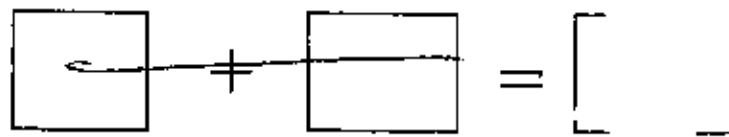
“अपने अदृश्रुत चमत्कारों से कर दिया चकित
जहाम।”

धर-धर उल्लास अर्पिया नाची सुरिकलहुर
आसाना।”

3 आधुनिक काल में विज्ञान - विज्ञान ने
आकाश - याताल
के अनेक गुट रहस्यों को सुझा
दिया है। आज का युग बटन का
युग बन गया है। बटने दबाते ही
अनेक वैज्ञानिक उपकरण हमारी
आज्ञाकारी सेवक की श्रॉति सेवा
करने लगते हैं।

“विज्ञान के चमत्कारों से सिर चकराया।
इतना सब कुछ देखकर दिल दबराया।”

4 विज्ञान वरदान के रूप में - विज्ञान वास्तव
में मानव के
लिए वरदान बनकर आया है। कहा



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 23 के अंक

कुल अंक



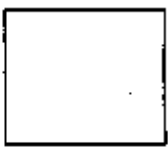
भी गया है -

“यह समय विज्ञान का सब शक्ति पूर्ण समर्थ।
सुल जाये शुद्ध संस्कृति के अमित गुरु अर्थ।
विभिन्न क्षेत्रों में विज्ञान के चमत्कार
निम्ना लिखित हैं -

i) शिक्षा के क्षेत्र में - शिक्षा के क्षेत्र में
विज्ञान ने मनुष्य को
अनेक सुविधाएँ प्रदान की हैं।
टी. वी. कम्प्यूटर, रेडियो आदि
शिक्षा को सरल बनाने के साधन हैं।

ii) चिकित्सा के क्षेत्र में - विज्ञान ने चिकि-
त्सा के क्षेत्र में
अनेक उपकरण तैयार किये। ऐसा
कोई रोग नहीं जिसका इलाज
संभव न हो। टी. वी. कैंसर जैसे
रोगों का भी आज उपचार संभव है।

iii) कृषि के क्षेत्र में - विज्ञान ने कृषि के
क्षेत्र में क्रांति ला
दी है। खाद का उत्पादन कई गुणा
बढ़ गया है। ट्रैक्टर, सिंचाई के
पम्प, बीज बोने से लेकर काटने



पृष्ठ के अंकों का योग

B
S
E
M
P



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 24 के अंक

कुल अंक



B
S
E
M
P

तक के रासायनिक उर्वरक विज्ञान ने ही प्रदान किये हैं।

4. आवागमन के क्षेत्र में - आवागमन के द्रुतनामी साधनों के कारण आज मनुष्य दिल्ली में भोजन करता है, कलकत्ता में पानी पीता है और मुम्बई में जा कर शयन करता है। आज इस अमेरिका, ब्रिटेन आदि देशों की यात्रा स्वप्न नहीं रह गई। यात्रा सरल, सुखद और सुरक्षित है।

“अणुयुग बने जीवन धरा, स्वर्ग सुख का साधन। मानवता ही विश्व सन्ध भू-राष्ट्र करे आत्मा-वर्ण।”

इस प्रकार विज्ञान ने हर क्षेत्र में क्रांति ला दी है। सुमित्रानंदन पंत जी ने कहा है -

“चरमोत्तम है जगत में कि आज विज्ञान ज्ञान बहुभौतिक साधन यंत्र धान वैभव महान सेवक है विद्युत वाह्य शक्ति धन-बल निताता।”

5. अंतरिक्ष में विज्ञान - विज्ञान ने इन्सैट, मास्कर, रोहिणी आदि

पृष्ठ के अंकों का योग

20010

परीक्षक के लिये

1. केन्द्र की सील

2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक

3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर व दिनांक

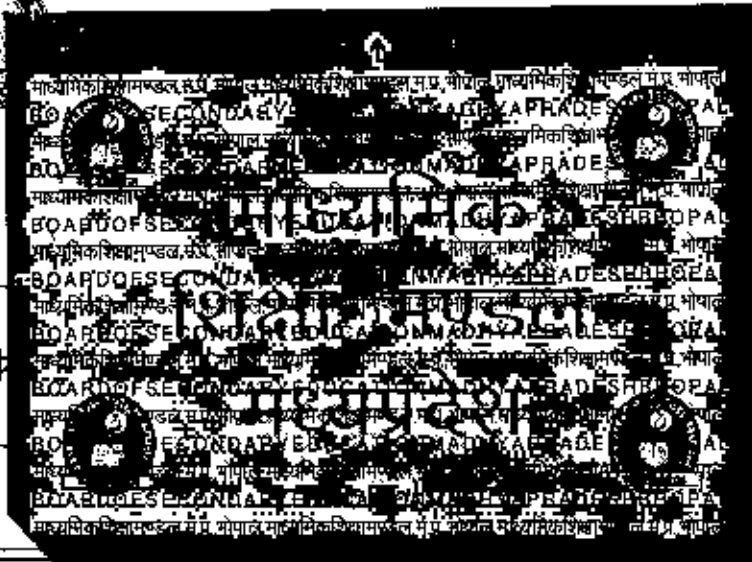
4. केन्द्र क्रमांक

6. परीक्षा का नाम

7. विषय Hindi (General) माध्यम English

8. दिनांक 12-03-09

पृष्ठ



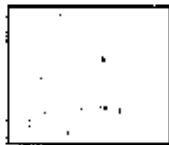
उपग्रह अंतरिक्ष में स्थापित कर दी है।
जिस चंद्रमा को देखकर बड़े-बड़े

विद्वान केवल -
*"Twinkle Twinkle little star,
How I wonder what you are."*

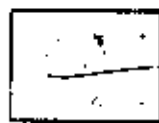
कहकर संतुष्ट हो जाते थे। उसे भी
मानव की पिशासा से शांत कर दिया
है। मानव चंद्र यात्रा कर आया है,
अब मंगल और दुस्त ग्रहों की बारी
है।

6. विज्ञान अभिशाप के रूप:- जिस प्रकार
प्रत्येक सिक्के के
दो पेल्लु होते हैं, सुख के साथ
दुख का भी सामना करना पड़ता
है यह सचचाई विज्ञान के साथ भी
लागू है क्योंकि -
*"Science is a
good servant but a bad master"*

B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का यथा



अर्थात् विज्ञान एक अच्छा सेवक है परन्तु बुरा स्वामी है। कहा गया है -

"सावधाना हे मनुष्य यदि विज्ञान है तलवार काट मत लेना अंग बड़ी तीखी है ये धारा।"

i) विनाशकारी युद्ध सामग्री का निर्माण - विज्ञान के द्वारा विनाशकारी युद्ध सामग्री का निर्माण हो रहा है जो पल भर में पृथ्वी को नष्ट कर सकती है।

कहने को तो बड़ी सुशरंभ है दुनिया, फूलों की एक हसीन बसुंडी है दुनिया पर एक छट्ठी युग में राख के ढेर पर रखी है दुनिया।

ii) वायुमयण का (दूषित) होना - बड़े-बड़े कल कारखानों के विषैल धुएँ से वायु प्रदूषण बढ़ रहा है। जल प्रदूषण का कारण भी विज्ञान ही है।

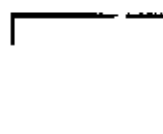
लोग संरमय हुए हृदय हुआ ठस्पात।
बर्फ हुई संवेदना खन्म हुई सब भाता।

iii) भौतिकवादी दृष्टिकोण - विज्ञान ने भौतिकवादी दृष्टिकोण से भी लोगों को हानि पहुंचाई है। आज का मनुष्य

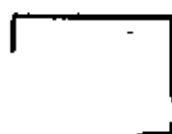
3



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 3 के अंक

दुल अंक



भोगवादी ऊँर दृष्टि कोण से भी पराजित हो रहा है।

“घर-घर में फैला विज्ञान का आज प्रकार करता दोनों काम यह नई-निर्माण बिना

7 उपसंहार :- वस्तुतः विज्ञान अपने अंदर विनाश और निर्माण दोनों ही शक्तियाँ समेटे हुए है। यह तो उसके कार्य पर निर्भर करता है कि वह उसे कैसे प्रयोग करे क्योंकि यह विष्णु के समान सबकी पालक है पर नैतिक अंकुश के अभाव में शंकर के समान संहार करने वाला भी बन सकता है।

‘भला बुरा न कोई रूप से कहलाता है। दृष्टि भेद स्वयं दोष गुण दिखलाता है। कोई कमल की कली दुँढता है किचड में किसी को चाँद में भी दाग मजूर आता है।’

B
S
E
M
P

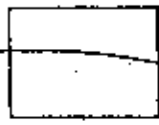
पृष्ठ के अंकों का योग

4



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 4 के अंक

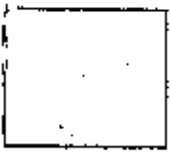
=

कुल अंक



B
S
E
M
P

Handwritten scribble or signature.



पृष्ठ के अंक का योग